शब् ए बराअत पर होने वाली गैर शरई हरकात

आतिशवाजी , फ़ुज़ूल खर्ची , नौजवानों का गुंडागिर्दी और मोटरसाइकिल घुमाना , बेजा रौशनी करना इन सब में इसराफ़ है इरशाद ए रब्बानी है
फ़ुज़ूल खर्ची बिलकुल मत करो बेशक! फ़ुज़ूल खर्ची करने वाले शैयातीन के भाई हैं

(सूरेह बनी इस्राईल #26-27)

“मस्जिद तो बना ली पल भर में ईमान की हरारत वालों ने
दिल अपना कब का पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका”

नोट:

नौजवानों से खास गुज़ारिश है के आज से अपनी ज़िन्दगी में इन्क़िलाब लाने की कोशिश करें और अल्लाह से तौबा करें और मगफिरत तलब करें और पुरानी कोताहियों से तौबा करके शरीयत पे अमल करने की कोशिश करें
और
एक बात और अगर किसी की नमाज़ और रोज़ा क़ज़ा गए हों तो वो नवाफिल की जगह क़ज़ाए ए उमरी और फ़र्ज़ रोज़ों की क़ज़ा करे क्युकी अगर आपकी नमाज़ क़ज़ा है तो आपका कोई नफिल नमाज़ और रोज़ा क़ुबूल नहीं होगा

फ़ज़ाइले
शब् ए बराअत

क़ुरान ओ हदीस की रौशनी में

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com

शब् ए बराअत की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला ने अपने हबीब ए पाक की निसबत से इस उम्मत को अपनी बेपाया रहमतों और नेमतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है अल्लाह तआला का लुत्फ़ो करम यूँ तो हर आन बरसता रहता है लेकिन उस ने अपने अपने गुनहगारों की खुसूसी बख़्शिश व मारिफ़त के लिए बाज़ दिनों और रातों को मुक़र्रर फ़रमाया है उन्ही मुक़द्दस रातों में एक रात शब् ए बराअत की रात है

इरशाद ए रब्बानी है

बेशक हमने इसे बरकत वाली रात में उतारा, बेशक हम डर सुनाने वाले है, इसमें बाँट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम, हमारे पास के हुक्म से बेशक हम भेजने वाले हैं, तुम्हारे रब की तरफ से रेहमत बेशक वही सुनता जानता है (सूरेह दुख्खान #3-6)

सहाबी ए रसूल हज़रात इबने अब्बास इस आयत की तफ्सील में फरमाते हैं "जुमला मुआमलात के फैसले शाबान की 15 वीं शब् में होते हैं (रुहुल मानी)

हज़रात इक्रमा और उलमा की एक जमाअत ने फ़रमाया "वो 15 वी शाबान की रात है और इस रात को शब् ए रेहमत , शब् ए मुबारक, शब् ए इनआम और शब् ए बराअत कहते हैं (रुहुल मानी)

गौस ए आज़म इस आयत के तहत फरमाते हैं "के वो शाबान की 15 वी रात है और वो शब् ए बराअत है" (गुनयातुत तलिबीन)

शब् ए बराअत में जागना और इबादत करना

1.सुनन इबन ए माजा शरीफ हदीस न. 1451 , शोएब उल ईमान हदीस न. 3664 में है

"हज़रत मौला अली से रिवायत है हुज़ूर नबी ए करीम अलेह सलाम ने फ़रमाया जब शाबान की 15 वी शब् हो तो उसकी रात में क़याम करो , दिन में रोज़ा रखो क्युकी अल्लाह उस रात सूरज डूबते ही आसमान ए दुनया की तरफ अपनी शान के मुताबिक़ नुज़ूल ए इजलाल फरमाता है और फरमाता है क्या कोई मगफिरत का तलबगार है की मई उसको बख्श दूँ , क्या कोई रिज़्क चाहने वाला है के मई उसको रिज़्क़ अत करूँ , क्या कोई मुसीबत ज़दा हुआ के मै उसको आफ़ियत दूँ इसी तरह फरमाता है यहाँ तक के फज्र तुलु हो

2.हज़रत अबू करदूस अपने वालिद से रिवायत करते के जो कोई शख्श दोनों ईद और शाबान की 15 वि रात को जागता है (इबादत करते हुए) तो उस शख्स का दिल मुर्दा नहीं होगा जिस दिन लोगो के दिल मुर्दा हो जायेंगे (कंज़ुल उम्माल शरीफ #24107)

3. हज़रत इब्राहीम कहते हैं की मौला अली ने फ़रमाया मैंने हुज़ूर अलेह सलाम को शाबान की 15 वी रात को क़याम में देखा आप ने 14 रकआत अदा फ़रमाई फिर नमाज़ के बाद आप तशरीफ़ फरमा हुए और सूरेह फातिहा, इखलास, फलक ,नास 14 मर्तवा पढ़ी और एक मर्तबा आयत अल्कुरसी और सूरेह तौवा की आयत 128 (लक़द जाअकुम) आखिर तक तिलावत फ़रमाई

जब हुज़ूर अपनी दुआ से फारिग हुए तो मेने आप से इस अमल ए मुबारक के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया जो कोई शख्स इस तरह करे जैसा तुमने देखा तो उसके लिए 20 मक़बूल हज और 20 साल के मक़बूल रोज़ों का सबाब है और अगर वो इस दिन रोज़ा रखेगा तो उसके लिए 2 साल पिछले और आने वाले साल के रोज़ों का सबाब लिखा जायेगा (शोएब उल ईमान)

शब् ए बराअत मगफिरत की रात

हज़रत अबू मूसा अशअरी से रिवायत है "हुज़ूर अलेह सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला शब् ए बराअत में बन्दों की तरफ मगफिरत और रेहमत की तजल्ली फरमाता है और मुशरिक और किना परवर(जिसके सीने में मुसलमान के लिए कीना हो) और बद अक़ीदा के सिवा तमाम मख्लूक़ को बख्श देता है (यानी मुसलमानों को) (इबन ए माजा , शोएब उल ईमान)

शब् ए बराअत और ज़ियारत ए क़ुबूर

उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा ने फ़रमाया मैंने एक रात हुज़ूर अलेह सलाम को न पाया मै निकली और देखा की आप जन्नत उल बक़ी में हैं हुज़ूर अलेह सलाम ने फ़रमाया क्या तुम्हे अंदेशा हुआ अल्लाह और उसका रसूल तुम पर ज़ियादती करेंगे , मैंने अर्ज़ किया मैंने ख्याल क्या की आप किसी और ज़ौजा ए मुतह्हरा के पास तशरीफ़ ले गए तो हुज़ूर अलेह सलाम ने फ़रमाया के अल्लाह तआला शब् ए बराअत को आसमान ए दुनिया पर नुज़ूल ए इजलाल फरमाता है और बनी कल्ब की बकरियों के बालों की तादाद से ज़्यादा लोगो की मगफिरत फरमाता है (जामा ए तिरमीज़ी)